सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 176

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
जुलाई – 2019

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

'गुरुपूर्णिमा'

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों

आज हम सब यहाँ गुरुपूर्णिमा मनाने के लिए एकत्रित हुए है। हम गुरु की कृपा तो चुका नहीं सकते मगर उनके द्वारा स्थापित किए हुए सिद्ध कार्य को सुदृढ़ता से समाज तक पहुँचा सकते है और इसी का प्रयत्न इस निवेदन में करने की कोशिश की गई है।

कर्मजन्म, कार्यजन्म और कारण जन्म

सप्तलोक का चित्र

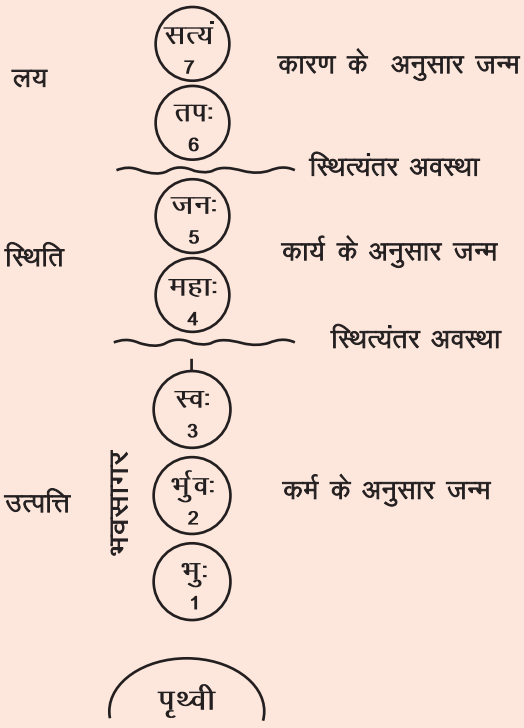

कर्म जन्म में कर्म होते हैं तथा उन कर्मों के अनुसार फल प्राप्त होते हैं। कर्म जन्म के दो प्रकार हैं। 1) वासना के कारण कर्मजन्म और 2) इच्छा के कारण कर्मजन्म। वासना के कारण जन्म में देहिक और आत्मिक तत्वों में विषमता होती है और इसलिए आपका जीवन पूर्णतः इहलोक में नहीं होता। इच्छा के कारण जन्म में देहिक और आत्मिक तत्व समान प्रमाण में होते है इसलिए इच्छापरत्वे जन्म प्राप्त करने वाले व्यक्ति 100 % इहलोक में होते है। देहिक अवस्था के 19 माध्यम पूर्णतः विकसित करने से उनका जन्म सफल होता है। इच्छा के कारण लिया हुआ जन्म सफल तथा संपूर्ण होने के बाद आगे की श्रेष्ठ अवस्था का जन्म यानी स्थिति अवस्था में कार्य के लिए जन्म प्राप्त होता है। आकृति देखिए।

कार्य के लिए जन्म मतलब क्या है? सृष्टि के अनेक विषयों द्वारा मानवों को सुख, शांति, समाधान की प्राप्ति होती है। उन विषयों में ज्ञान की कुछ कमी होती है और उन विषयों में और प्रगति हो सकती है। ऐसे समय कुछ व्यक्ति उन विषयों के प्राथमिक ज्ञान का विषय लेकर उसमें अधिक अनुसंधान करके मानवों के ज्ञान में और मानवों को प्राप्त हुए सुखों में वृद्धि करते हैं। ऐसे व्यक्तियों का जन्म कार्य जन्म होता है।

आज हम जो लोककल्याण का कार्य कर रहे हैं क्या वह कार्य के लिए जन्म है? गुरुमार्ग का कार्य यह कार्यजन्म का ही एक भाग है। निसर्ग का तथा परमेश्वर का सृष्टि निर्मिती का कार्य अनंतकाल से चल रहा है। इसमें परमेश्वर इस पद्धति के सेवा कार्य से परोपकार करते हैं लेकिन आप मानव उसका गलत फायदा उठाते है और अधिक से अधिक अपेक्षा करते रहने के अलावा अन्य कुछ नहीं करते।

साधना करने वाले व्यक्तियों को ऐहिक जीवन की अपेक्षा पारमार्थिक जीवन में अधिक काल व्यतीत करने की इच्छा होती है। पारमार्थिक लाभ अधिक मात्रा में प्राप्त हो यह आपका लोभ योग्य नहीं है। वास्तव में ऐहिक या पारमार्थिक इसमें से कुछ भी प्राप्त होने की जो इच्छा–अपेक्षाऐं हैं वे परमेश्वर को समर्पित करनी चाहिए क्योंकि आपके लिए क्या सही है यह आपसे ज्यादा परमेश्वर ही समझते है। आपका नित्य सेवा करते रहना आवश्यक है। साधना करने वाले व्यक्ति इस लोभ में फँस सकते है। जिसके कारण उन्हें फिर से भवसागर यानी आकृति में दिखाए अनुसार नीचे के तीन लोकों में 360 साल रहकर फिर से उत्क्रांती करनी पड़ती है।

उत्क्रांती तत्व के अनुसार नैसर्गिक रीति से मानवों को स्थिति अवस्था प्राप्त होती है। इसमें अलग–अलग विषयों के अनुसार कार्य जन्म प्राप्त करने वाले व्यक्ति अपनी 'उत्पत्ति' अवस्था का पूर्णत्व करके 'स्थिति' अवस्था का आरंभ करते हैं। स्थिति अवस्था में कोई व्यक्ति विज्ञान क्षेत्र में रहकर जगत के विषय सिद्ध करने की अवस्था में होता है तो कोई व्यक्ति साधनामार्ग में रहकर लोककल्याण का कार्य करता है।

जगत का यानी संपूर्ण सृष्टि का कार्य देखा तो आज के 100 सालों में जितने आविष्कार हुए हैं उतने पहले के सौ सालों में नहीं हुए हैं। विश्व में युग निर्माण होते हैं। आज का यह शतक भौतिक युग है। इसके पहले आध्यात्मिक युग था और उसके पहले पारमार्थिक युग था। इस तरह 100–100 सालों का एक वलय निर्माण होता है। उसमें कार्य के लिए जन्म लेने वाले व्यक्ति मानवीय जीवन की जागृति करके जगत से चले जाते हैं। उनका फिर से जन्म लेने का काल 100 सालों का है। आम मानवों का फिर से जन्म लेने का काल 360 सालों का है। आप मानव (वासनायुक्त) यहाँ पृथ्वी पर अनाज तथा धन का संचय समाप्त करने के लिए व्यर्थ जन्म लेते है।

साधक व्यक्ति देवताओं की उपासना करते है और उस उपासना के कारण उनकी 'उत्पत्ति' अवस्था का पूर्णत्व होकर वे 'स्थिति' अवस्था में आते हैं। स्थिति अवस्था में आने के बाद क्या होता है? साधक ने जिस अवस्था का लय किया है वह अवस्था उसे दिखाई देती है और उसकी जिस अवस्था का आरंभ हुआ है वह अवस्था भी उसे दिखाई देती है। इस तरह इस अवस्था के साधक को तीनों कालों का ज्ञान होता है मतलब भूत, वर्तमान और भविष्य काल का उसे ज्ञान होता है। यह ज्ञान होने के कारण वह जगत में 'महाराज' के रुप में प्रसिद्ध होता है। अगर ऐसे साधक इस ज्ञान से लोककल्याण का कार्य नहीं करते हैं तो उनका कार्य शून्य है। जिन्हें जीवन विकास की अत्यंत आस है ऐसे बहुत से लोग ऐसे व्यक्तियों द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करने की इच्छा से उनके वश में आते हैं क्योंकि उन्हें त्रिकालज्ञान हैं लेकिन इन व्यक्तियों का त्रिकालज्ञान उनकी साधना का पूर्णत्व नहीं है। नैसर्गिक पद्धति के अनुसार 'उत्पत्ति' अवस्था का पूर्णत्व और 'स्थिति' अवस्था का उदय प्राप्त होने के कारण उन्हें त्रिकालज्ञान की प्राप्ति होती है। त्रिकालज्ञानी होकर भूत, भविष्य बताना यह साधन सिद्धता नहीं है। आज ऐसे साधकों की लोगों द्वारा 'महाराज' के रुप में स्तुति होती रहती है। आपको अत्यंत सूज्ञता से और गहराई से यह देखना आवश्यक है कि आज समाज में ऐसी अवस्था के साधकों में क्या लोककल्याण का कार्य करने की आस, लगन, आत्मियता और अपनापन है या नहीं है?

कार्य के लिए जन्म यह अवस्था किसे प्राप्त होती है यानी परमेश्वर कार्य अवस्था में जन्म क्यों देते हैं? साधक ने परमेश्वर की जो सेवा की है उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उपहार स्वरूप परमेश्वर साधक को कार्य अवस्था में जन्म देते हैं। लेकिन परमेश्वर के इस उपहार की अदायगी साधक ने पहले से श्रेष्ठ साधन प्राप्त करके करनी होती है। स्थिति अवस्था में जन्म प्राप्त होने के बाद साधक ने जगत कल्याण के लिए जीवन व्यतीत करना होता है लेकिन इस अवस्था में साधक का अहंभाव जागृत

होता है, उसे लगता है कि सब लोग मूर्ख है, मैं ही केवल ज्ञानी हूँ। उसके त्रिकालज्ञान के कारण आम लोग भी उसके वश में आते हैं।

कुछ संन्यासी भगवा (केसरी) रंग के वस्त्र पहनते हैं लेकिन स्थिति अवस्था प्राप्त करने के बाद ही भगवा रंग के वस्त्र पहनने चाहिए। आज समाज में ऐसे मार्गदर्शक हैं जो भगवा वस्त्र पहनकर उनके अनुयायियों के साथ घूमते हैं। शास्त्रों में भगवा रंग कब पहनने को कहा है? स्थिति अवस्था का जन्म प्राप्त होता है तब, उसके पहले नहीं। आज हम यह देखते हैं कि साधक भगवा रंग के वस्त्र परिधान करके रूद्राक्षमाला पहनते हैं लेकिन उनके केवल वस्त्रों का रंग भगवा है उनकी देह उत्पत्ति अवस्था में ही है।

इहलोक में जिन्हें सहजता से स्थिति अवस्था प्राप्त हुई है उनके लिए इस अवस्था में पतन का (गिरने का) धोखा भी होता है। इस अवस्था में 'महाराज-महाराज' करके लोगों द्वारा प्रशंसा होती है और साधक को उसमें सुख का अनुभव होता है। इस अवस्था में लोग साधक को 'महाराज' मानते हैं लेकिन लोककल्याण का कार्य हो इसलिए परमेश्वर ने साधक को स्थिति अवस्था में जन्म दिया है ना कि 'महाराज' संबोधन के लिए। इस अवस्था में यदि पतन हुआ तो फिर से नीचे के स्तर की यानी उत्पत्ति अवस्था की प्राप्ति होती है। 360 सालों के बाद यह उच्च अवस्था प्राप्त हुई थी लेकिन योग्य आचरण नहीं किया इसलिए इस अवस्था में मृत्यु होने के बाद फिर से उत्पत्ति अवस्था में जाना पड़ता है।

स्थिति अवस्था में आपको त्रिकालज्ञान प्राप्त हुआ है लेकिन आप परमेश्वर नहीं बने है। आपने यह सोचना चाहिए, "मुझमें पूर्णत्व ना होकर भी परमेश्वर ने मुझे त्रिकालज्ञान दिया है। अब उपासना करके देवताओं द्वारा अधिक शक्ति प्राप्त करके ये जो तीन काल के ज्ञान के तीन भाग मुझे प्राप्त हुए हैं उन्हें एकत्रित करके मुझे 'ब्रह्मज्ञान' प्राप्त करना चाहिए।" इसके विपरीत त्रिकालज्ञान का उपयोग करके लोगों की दिशाभूल की जाती है। लोग आपको श्रद्धा से मानते हैं, आपको प्रसिद्धि प्राप्त होती है लेकिन आपके अयोग्य आचरण के कारण मृत्यु के बाद आपको फिर से उत्पत्ति अवस्था में जाना पड़ता है। इसे आप क्या कहेंगे? इसी को 'जीवन का दैवदुर्विलास' यानी 'नसीब का मारा' कहा है। आपको फिर से वासना के कारण, इच्छा के कारण जन्म प्राप्त होना यह कितने दुख की बात है। सहज और आसान पद्धति से देवतार्चन करने के कारण आपको स्थिति इस उच्च अवस्था तक लाकर ईश्वर ने कृतार्थ किया था। आपका यह उच्च अवस्था का जीवन परमेश्वर द्वारा आपको प्राप्त हुआ उपहार था लेकिन अपने अज्ञान से उस उपहार का दुरूपयोग करके आपने खुद के ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है। अब दुबारा इस उच्च अवस्था तक जाने के लिए आपको 360 साल रुकना पड़ेगा। इसलिए आप इस बात का विचार कीजिए – आप गुरुमार्ग में कृपावंत हुए है, आपकी परिस्थिति सुधर गई है, आपकी आमदनी बढ़ी है, गुरुमार्ग में आने वाले अन्य व्यक्तियों को आप गुरुकृपा का लाभ दे सकते है। अब इतनी सार्थकता आपमें निर्माण करने के बाद आप क्या कर रहे हैं?

आपके सामने यह सवाल है कि कार्यकेंद्र पर हम जो कुछ सेवा कर रहे हैं उसके कारण हमें आगे क्या अवस्था प्राप्त होगी? इसका स्पष्टीकरण सुनिए – जब निसर्ग के अनुसार स्थिति अवस्था में जन्म प्राप्त होता है तब मनुष्य के पास योग्य–अयोग्य का निर्णय करने के लिए विचार और विवेक नहीं होता क्योंकि उस समय जिस अवस्था का परिपाक होता है केवल उसी अवस्था का ज्ञान होता है। आज आपकी अवस्था गुरुमार्ग से साकार हुई है इसलिए आपको यह एहसास होता है कि श्री गुरु ने मुझे यह अवस्था प्राप्त कराई है और वे मेरे नजदीक ही है। जब निसर्ग के अनुसार स्थिति अवस्था में जन्म प्राप्त होता है तब यह एहसास नहीं होता क्योंकि वह नया और उच्च जन्म होता है। यह अवस्था किसने साकार की है? यह ज्ञान नहीं होता इसलिए लोग कहते हैं कि यह 'मेरी पूर्वपुण्याई' है। श्री गुरु को आपके जन्म का ज्ञान होता है इसलिए आप स्थिति अवस्था में जाने के बाद आपके द्वारा समाज के लिए, धर्म के लिए हानिकारक ऐसा कोई भी कार्य ना हो इसलिए आपमें यह अवस्था आज हम कार्यान्वित कर रहे हैं। मतलब फिर से जन्म लेकर जो अवस्था आप प्राप्त करने वाले हैं उस अवस्था के लिए आवश्यक सीख आज हम आपमें धारण करा रहे हैं। कैसे? overdraft के रूप में। किस पर? on credit । क्यों? आज तक की आपकी गुरुमार्ग की पुण्याई देखकर। यह संस्कार आज हम इसलिए कर रहे हैं कि हम यह जानते है कि आज यहाँ जो व्यक्ति उपस्थित है उन सबने इच्छा के कारण जन्म प्राप्त किया है। इस जन्म में साधना, उपासना तथा योग्य आचरण के कारण आपको अगली अवस्था में यानी स्थिति अवस्था में जन्म प्राप्त होने वाला है। जब आपको स्थिति अवस्था का जन्म प्राप्त होगा तब आपसे गलती ना हो इसलिए हमने आज यह अवस्था आपमें धारण कराई है।

आज हर एक को कार्यकेंद्र पर सेवा करने के लिए सप्ताह में कम से कम एक बार आने के लिए कहा जाता है, ऐसा क्यों? जब आपको प्राप्त हुई स्थिति अवस्था पूर्णतः आपके स्वाधीन होगी तब आपके स्वाधीन हुए स्वाध्याय के बारे में आपको सद्सद्विवेक नहीं रहेगा। आपके स्वाधीन हुआ स्वाध्याय जतन करने के लिए आपमें सद्सद्विवेक नहीं रहेगा और केवल देहिक आनंद के लिए आप गुरुकृपाशीर्वाद की यह अनमोल धरोहर व्यर्थ खर्च करोगे। आपके द्वारा यह अनमोल पूँजी व्यर्थ खर्च ना हो इसलिए कार्यकेंद्र पर आपसे सेवा कार्य करवाके आपमें इस अवस्था का संस्कार आज हम कर रहे हैं। यह गुरुऋण आप कैसे अदा कर सकते है?

अन्य मार्गों में आप लोगों की पात्र-अपात्रता, पाप-पुण्य, आपने सत्कर्म किया है या दुष्कर्म किया है, आदि अनेक विषय

विचारों में लेकर आपके द्वारा की गई साधना नापी जाती है लेकिन श्री साई आध्यात्मिक समिति की कार्यपद्धति में इनको प्रधानता ना देकर मुझ जैसे सामान्य साधक को मेरे सद्‌गुरु ने जो दिया है वह आपमें साकार करने का साधन श्री गुरु ने आज आपको दिया है। श्री गुरु ने दिया हुआ यह साधन आपके आगे के जन्मों का 'बीज' है।

आज आपको आपके जीवन का अल्पकाल कार्यकेंद्र पर कार्यार्थ यानी सेवा के लिए व्यतीत करना पड़ रहा है लेकिन आपकी कार्यकेंद्र की सेवा व्यर्थ नहीं जाएगी। आपको इस जगत में कुछ दिन और जीने की इच्छा है और उसके लिए आप किसी को 5 लाख रुपये दोगे तो भी आपको एक क्षण का अधिक जीवन प्राप्त नहीं हो सकता, ऐसा आपका यह अनमोल जीवन है। इसमें पुनश्च जन्मप्राप्ति के लिए असाध्य कष्ट है। ऐसी यह भवताप की और भवसागर की असाध्य यात्रा आज श्री गुरु ने कृपावंत होकर आपको सुलभता से प्राप्त कराई है।

ऐसी इस 'कार्य अवस्था' में आज हम सब गुरुबंधु इस गुरुपूर्णिमा उत्सव के लिए एकत्रित हुए है। इसलिए आज आप पर सेवक के रुप में इस कार्य की मूलभूत जिम्मेदारी निभाने का कर्त्तव्य है और यह कर्त्तव्य निभाते समय आपमें से किसी ने भी पीछे नहीं हटना चाहिए।

इसी संदर्भ में एक ऑस्ट्रेलियन गुरुबंधु ने वं. दादा महाराज को लिखे हुए पत्र का निचोड़ निम्नलिखित है। वं. दादाजी ने इस सिद्ध कार्य को दुनिया तक पहुँचाया और आज यह कार्य ॐकार साधना, प्रतिमाऐं तथा मुलाकात द्वारा दुनिया में जा रहा है।

Mr. Dennis Kellys - "It felt like an open heart surgery performed after the Aumkar Sadhana and it created a warm feeling in the heart. The surgery was very successful and then happy tears started flowing just as a mother cries for her son. We are confident that this light will illuminate our lives and we hope to visit India to pay our respects at Guru-Peeth and Shaktipeeth and meet our brothers and sisters."

Mrs. Marry Allen Jensen - "The road of life appears tough and difficult but great saints like "Dada" made God real and brought him into me. It is a thrilling experience."

आज जिस कार्य का लाभ आप ले रहे है इसमें हजारों साल पहले से 3 पंथ है – 1) दत्त 2) नाथ 3) सूफी। हमारे कार्य की फिलॉसाफी यानी तत्वज्ञान सूफी तत्वज्ञान है। सिद्धसिद्धांत पद्धति नाथपंथ की है और मानवों के जीवन के उद्धार के लिए जो कार्यपद्धति है यानी विमोचन आदि विधि ये सब दत्तपंथ के है। इन तीनों पंथों की त्रिपुटी यानी 'श्री साई आध्यात्मिक समिति'। इन तीनों पंथों की शक्ति 'श्री साई आध्यात्मिक समिति' में समाई है। ऐसी समिति निर्माण करके इतने भक्तगणों को एकत्रित करने का सामर्थ्य मेरा नहीं है। यह कार्य परमेश्वर का ही है जो मेरे माध्यम द्वारा उन्होंने स्थापित किया है। दत्त, नाथ, सूफी इन तीनों पंथों को प्राप्त करने के लिए मेरा पूरा जीवन मैंने इन तीनों पंथों को समर्पित किया है।

अगर गलती से भी आपको सुई चुभती है तो आप जोर से चिल्लाते हैं। क्या आपने मेरे कान के ये छिद्र देखें है? मेरी 8 साल की उम्र में मेरे पिताजी ने मुझे सूफी पंथ को समर्पित किया था। उस समय दरगाह में मुझे सूफी पंथ की दीक्षा दी थी। मुझे दीक्षा देने वाले के हाथों में बहुत बड़ा सुआ था। मुझे दरगाह के सामने बिठाकर उन्होंने पीछे से मेरे कान में सुआ से छिद्र किया और मुझे कहा, **"कहो, या अल्ला"** लेकिन मेरा जी घबरा गया था, कान से खून का फौवारा निकल रहा था, अल्ला कहने के लिए मुँह से आवाज भी नहीं निकल रही थी। इस तरह समिति का कार्य यह मेरे जीवन का ऐच्छिक व ऐहिक विषय नहीं था और आज भी नहीं है। दत्त, नाथ, सूफी इन तीनों पंथों के मुझ पर उपकार हैं जो आज मैं जरूरतमंद लोगों को 'कृपाशीर्वाद की भेंट' दे रहा हूँ। इसके लिए मुझे जैसे कष्ट उठाने पड़े है वैसे कष्ट आपको नहीं उठाने पड़े यह आपका सौभाग्य है। मुझे उसके लिए आपसे जलन नहीं है लेकिन अब जो आपको प्राप्त हुआ है उसे जतन करने के लिए आपने प्रयत्न करना आवश्यक है। श्री गुरु द्वारा आपको प्राप्त हुआ यह ज्ञान 'अक्षयज्ञान' है, इसे जो खो देते हैं उन्हें गुरुभक्त नहीं कह सकते।

।। शुभम् भवतु।।

सेवक।